

डॉ. रॉबर्ट यारब्रॉ, पादरी पत्रियाँ, सत्र 1, परिचय

© 2024 रॉबर्ट यारब्रॉ और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ और देहाती पत्रों पर उनकी शिक्षा, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए प्रेरितिक निर्देश है। सत्र 1, परिचय.

नमस्ते, मैं रॉबर्ट यारबोरो हूँ और मैं सेंट लुइस, मिसौरी, संयुक्त राज्य अमेरिका में कोवेनेंट थियोलॉजिकल सेमिनरी में न्यू टेस्टामेंट पढ़ाता हूँ।

मैं लगभग 40 वर्षों से पढ़ा रहा हूँ और मैं कई देहाती कार्यों में भी शामिल रहा हूँ। जबकि मैंने मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में पढ़ाया है, मैंने रोमानिया और सूडान और दक्षिण सूडान और दक्षिण अफ्रीका में भी पढ़ाया है। मैंने हांगकांग, ऑस्ट्रेलिया और कोरिया में भी व्याख्यान दिए हैं।

तो, तथ्य यह है कि आज जब हम एक देश में पढ़ाते हैं, तो अक्सर हमारी उपस्थिति दूसरे देशों में भी होती है, और इंटरनेट की दुनिया के साथ, हम सभी हर जगह जुड़े हुए हैं। चर्च पूरी दुनिया में एक है। और इसलिए, मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका से आपके साथ साझा करने में सक्षम होना बहुत अच्छा है, लेकिन यह भी जानते हुए कि चर्च पूरी दुनिया में है और भगवान के वचन की आवश्यकता है।

और जैसा कि पॉल 2 थिस्सलुनीकियों 3 में कहता है, परमेश्वर का वचन चल रहा है। यह अपना काम कर रहा है और इसका एक साथ अध्ययन करने में सक्षम होना बहुत अच्छी बात है। हम बस एक मिनट में प्रार्थना करने जा रहे हैं, लेकिन मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि हम बाइबल के किस भाग का अध्ययन कर रहे हैं।

और हम इन व्याख्यानों में देहाती पत्रों का अध्ययन कर रहे हैं। और हम 1 तीमुथियुस से शुरुआत करने जा रहे हैं। यही विहित आदेश है।

और हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि टाइटस 1 तीमुथियुस के बाद लिखा गया था या उससे पहले, लेकिन इससे वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे लगता है कि अपने उद्देश्यों के लिए, हम केवल विहित आदेश के साथ चलेंगे। और मैंने इन व्याख्यानों का शीर्षक रखा है, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए देहाती पत्री अपोस्टोलिक निर्देश।

ये वे पत्र हैं जो दो व्यक्तियों को लिखे गए हैं जो प्रारंभिक चर्च में नेता थे, और हम उन्हें पादरी कहेंगे, हालाँकि वे चर्च स्थापित करने वाले भी थे। वे मिशनरी थे। वे कुछ परंपराओं में पर्यवेक्षक थे।

अंग्रेजी में बिशप शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों के लिए किया जाता है जो अन्य पादरियों के कार्य की देखरेख करते हैं। और वे भी केवल ईसाई थे, और वे शिष्य थे। इसलिए, वे आपके किसी भी

प्रकार के ईसाई या ईसाई नेता के वर्णन में काफी हद तक फिट बैठते हैं, लेकिन हम उन्हें पादरी कहने जा रहे हैं क्योंकि इनका शीर्षक, या इन पुस्तकों को जो नाम दिया गया है वह अक्सर होता है। देहाती पत्रियाँ।

और फिर हम बार-बार देखेंगे कि इन नेताओं के लिए जिन अनुग्रहों का आह्वान किया जाता है, जिन चीजों की पुष्टि करने के लिए उनसे आग्रह किया जाता है, जिस तरह की सेवा प्रदान करने के लिए उन्हें बुलाया जाता है, ये ऐसी चीजें नहीं हैं जिन्हें बुलाना विदेशी है वे सामान्य आस्तिक हैं। उदाहरण के लिए, 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस अध्याय 2 में पादरी के लिए योग्यताएँ, ये ऐसी विशेषताएँ हैं जो सभी विश्वासियों के लिए सच होनी चाहिए। और इसलिए ऐसा नहीं है कि ये पुस्तकें गूढ़ पत्र हैं, चर्च के सिर्फ एक वर्ग के लिए किसी प्रकार की विशेष सलाह।

यह वास्तव में सलाह है जो नेताओं और उनके अनुयायियों दोनों पर लागू होती है। इसीलिए मैं इन व्याख्यानों को देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए प्रेरितिक निर्देश कह रहा हूँ। अब मैंने केवल एक अनुस्मारक के साथ शुरुआत की है कि जब भी हम बाइबल का अध्ययन करते हैं, तो हम बड़े संदर्भ में बाइबल के एक हिस्से का अध्ययन कर रहे होते हैं।

और पिछले कुछ वर्षों में मैंने पाया है कि एक छोटा सा संक्षिप्त नाम पीएमईईसी है, जो मुझे बाइबिल का सारांश प्रस्तुत करने में मददगार लगता है। और मुझे एक चार्ट मिला है, और इस चार्ट में हम जो देखने जा रहे हैं वह यह है कि बाइबल में एक विशेष सार है और वह सार सुसमाचार है। बाइबल कई चीजों के बारे में बात करती है, और हम पवित्रशास्त्र से कई सत्य प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि बाइबल का केंद्रीय ध्यान मुक्ति है।

और ईश्वर का एक शब्द है, जिसे हम ईसाई परंपरा में अच्छी खबर कहते हैं, कि ईसा मसीह मर गए, जी उठे और चढ़ गए और जैसा कि मैं यहां बोल रहा हूँ, वह ईश्वर के दाहिने हाथ से प्रार्थना कर रहे हैं, और वह वापस आएंगे और वह अपना अंतिम रूप देंगे। सारी पृथ्वी और स्वर्ग पर राज्य करो। और जैसे ही हम बाइबल को देखते हैं, हम देखते हैं कि लगभग 77% को हम पुराना नियम कहते हैं। और यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है, और यह इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इसका बाइबिल से क्या संबंध है, क्योंकि पुराना नियम सुसमाचार की तैयारी है, और इसलिए यहीं पर हमें संक्षिप्त नाम पीएमईईसी में पी मिलता है।

फिर चार सुसमाचार शुभ समाचार की अभिव्यक्ति हैं। वादा किया हुआ मसीहा आया, वह जीवित रहा, उसने सिखाया, उसने एक आंदोलन की स्थापना की, वह हमारे पापों के लिए मर गया, वह मृतकों में से जी उठा, वह पिता के पास चढ़ गया, और वह प्रकट हुआ, वह जमीन पर उतरा, उसने भगवान के उद्धार की इस अच्छी खबर की पुष्टि की एक ऐसी दुनिया जो आदम और हव्वा के साथ पाप में गिर गई।

तब हमारे पास सुसमाचार का विस्तार है। सुसमाचार कहीं चला गया। इस आंदोलन ने रोमन दुनिया में जड़ें जमा लीं, और अधिनियम की पुस्तक हमें यीशु के पुनरुत्थान के बाद उनकी उपस्थिति से लगभग 30 वर्षों की अवधि का एक सैपशॉट देती है। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में, वह 40 दिनों की अवधि में अपने शिष्यों को दिखाई दिए, और फिर लगभग 30 साल बाद, हम

प्रेरितों के काम 28 में पॉल को रोम में जंजीरों में जकड़े हुए देखते हैं जो परीक्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और यह 60 के दशक की शुरुआत में हुआ था, इसलिए यह 30 है, 32 साल, कुछ इस तरह, जहां चर्च का विस्तार हो रहा है, और हम देखते हैं कि सुसमाचार कैसे आगे बढ़ता है और चर्च कैसे स्थापित किए जाते हैं।

हम आज भी उस पैटर्न में हैं जहां संदेश प्रसारित हो रहे हैं और चर्च स्थापित किए जा रहे हैं और ईसाई अपने जीवन में ईश्वर की महिमा करना चाहते हैं और यीशु ने चर्च को शिष्य बनाने के लिए जो आदेश दिया है उसे पूरा करना चाहते हैं। यदि हमारे पास केवल प्रेरितों के काम में ही सुसमाचार हैं, तो जब बात आती है तो हमें दुख होता है, ठीक है, हम इस चीज़ के साथ क्या करते हैं जो अधिनियमों में घटित हुई थी जो पुराने नियम में तैयार किए गए सुसमाचारों में प्रकट हुई थी?

वह कैसा दिखता है जैसे वह जीवित था? और तभी हम पत्रियों पर आते हैं, और पत्रियाँ सुसमाचार की व्याख्या हैं, या कभी-कभी लोग व्याख्या शब्द का उपयोग करते हैं। सुसमाचार कैसा दिखता है जैसे अधिनियमों की विरासत में स्थानों पर रहता है, चाहे वह कोरिंथ हो या चाहे वह इफिसस हो, या चाहे वह अब तुर्की में चर्च हो? जब आप पत्रियों को समग्र रूप से देखते हैं, तो आप देखते हैं कि वे भौगोलिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करते हैं, और पत्रों में बहुत सारी विशिष्टताएँ हैं, लेकिन उनमें बहुत सारी स्थिरताएँ और बहुत कुछ भी हैं स्थिरांक का।

और इसलिए, हमें इस बात का स्पष्टीकरण मिलता है कि सुसमाचार को कैसे जीया जाता है, यह जमीन पर कैसा दिखता है, और जब हम पादरी के पास आते हैं, तो विशेष रूप से पादरी को अवसरों और खतरों और धमकियों आदि के प्रति कैसे सतर्क रहने की आवश्यकता होती है। अधिनियम की इस विरासत को जिएं जिसे नए नियम के पत्र अपनी सेटिंग में समझाते या समझाते हैं। और फिर अच्छी खबर के अलावा अच्छी खबर यह है कि चर्च का जीवन कोई अंतहीन ट्रेडमिल नहीं है।

दुनिया सिर्फ कुछ खुशियों और ढेर सारे दुखों का एक निरंतर चलने वाला चक्र नहीं है, बल्कि मसीह वापस आने वाला है, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीह के माध्यम से और भगवान के राज्य के माध्यम से दुनिया में भगवान की जीत के बारे में बात करती है जिसे मसीह ने स्थापित किया और आगे बढ़ाया और चर्च के माध्यम से भी और संतों के माध्यम से भी जो चर्च के सदस्य हैं।

तो, आपके पास पूरी बाइबिल है और 1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस, तीतुस पत्रियों का हिस्सा हैं, जो नीतिवचन, नीतिवचन 30, पद 5 की व्याख्या या एक कहावत हैं, भगवान का हर शब्द निर्दोष है। वह उन सभी के लिए ढाल है जो उसमें शरण लेते हैं।

तो, इस विचार को ध्यान में रखते हुए, आइए प्रार्थना के लिए रुकें। स्वर्गीय पिता, मसीह के लिए धन्यवाद। ऐसी दुनिया में जहां अक्सर बहुत बुरी खबरें होती हैं, सुसमाचार की अच्छी खबर के लिए धन्यवाद। और धन्यवाद कि आपका शब्द त्रुटिरहित और दोषरहित है। और तू अपने वचन के द्वारा अपनी प्रजा की ढाल है, क्योंकि हम तेरी शरण लेते हैं। और हम आपसे अनुरोध करते हैं

कि आप हमें इन व्याख्यानों में किसी का समय बर्बाद करने से बचाएंगे, बल्कि आप हमें समय बचाने में मदद करेंगे और आप अपने शब्द को प्रभावी बनाएंगे। मंत्रालयों में, उन सभी के जीवन में जो इन व्याख्यानों को सुनते हैं, और आप हमें इन्हें आत्मसात करने में मदद करेंगे और अपनी पवित्र आत्मा की शक्ति से, उन्हें अपनी दुनिया में अपनी महिमा के लिए जीएंगे। हम यीशु के नाम पर प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

तो, आइए 1 तीमुथियुस के संबंध में कुछ परिचयात्मक बातों पर नजर डालें।

हमारी आधुनिक दुनिया में, हमें 1 और 2 के लेखक तीमुथियुस और तीतुस के बारे में कुछ बातें कहनी हैं। और स्क्रीन पर रूपरेखा पर, आप देख सकते हैं कि लेखक पॉल है। अब आधुनिक दुनिया में पॉलीन के लेखकत्व पर कई आपत्तियां आई हैं और इस पर किताबें लिखी गई हैं।

मैं इस पर बहुत अधिक समय बर्बाद नहीं करने जा रहा हूं, लेकिन मुझे आपको मामलों की स्थिति के बारे में सचेत करने की आवश्यकता है ताकि यदि आप इन व्याख्यानों को सुन रहे हों और जब आप पॉल के सिद्धांत पर ठोकर खाएँ तो आप देहाती पत्रों के बारे में पढ़ते रहें उन्हें नहीं लिखा, तो आपको निराशा नहीं होगी क्योंकि मैंने आपको उसके लिए तैयार नहीं किया। 1805 के आस-पास जर्मनी में शुरुआत करते हुए, यह पहली बार था कि आप कह सकते हैं कि एक चर्च नेता ने वास्तव में सवाल किया था कि क्या पॉल ने पादरी लिखा था। और सिर्फ रिकॉर्ड के लिए, उसका नाम फ्रेडरिक श्लेइरमाकर था।

उनके बाद कई अन्य जर्मन विद्वान, एफसी बाउर और एचजे होल्ज़मैन आए। लेकिन जर्मनी में 19वीं सदी के मध्य तक, कुछ जर्मन विश्वविद्यालयों में यह सिद्धांत स्थापित हो गया कि पादरी की लेखन शैली पॉल के अन्य पत्रों से अलग थी, इसलिए उन्होंने उन्हें नहीं लिखा। और साथ ही, उन्होंने देखा कि जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट नहीं होता है कि उसने ये पत्र कहाँ लिखे होंगे।

उनके लिए कोई स्पष्ट सामाजिक परिवेश या ऐतिहासिक परिवेश या स्थान नहीं है। तो, उस आधार पर, उन्हें लगा कि पॉल द्वारा उन्हें लिखे जाने के बारे में संदेह होना वाजिब है। और फिर उन्होंने ऐसे तरीके खोजे जब वे देहाती पत्रियाँ पढ़ते थे, मैं पुराने लैटिन वाक्यांश का उपयोग करता था, हालाँकि मैं इसका अनुवाद करूँगा, विभाजित करो और जीतो।

फूट डालो और राज करो। आप पादरी या कुछ विषयों के कुछ कथन ले सकते हैं और कह सकते हैं, वास्तव में ऐसा नहीं है, यह रोमनों की तरह नहीं लगता है या यह फिलिप्पियों की तरह नहीं लगता है। और इसलिए, पादरी को पॉल के अन्य पत्रों या पॉल के कुछ अन्य पत्रों से अलग करके, उन्होंने महसूस किया कि पादरी पत्र में ऐसी सामग्री थी जो वास्तव में पॉल द्वारा अन्य पत्रों में कही गई बातों से सहमत नहीं थी।

तो, ये पत्र किसी और ने लिखे होंगे। अब यह पश्चिमी शिक्षा जगत में प्रमुख सिद्धांत है। यदि आप किसी पश्चिमी विश्वविद्यालय में जाते हैं, यदि आप बहुत सारे पश्चिमी मंदिरों में जाते हैं, तो आपको सिखाया जाएगा कि पॉल ने पादरी नहीं लिखे।

और यदि आप इसका एक अच्छा सारांश चाहते हैं, इन विचारों का विकास, और उनकी एक अच्छी आलोचना भी, तो ल्यूक टिमोथी जॉनसन ने एंकर बाइबिल कमेंटरी श्रृंखला में एक टिप्पणी लिखी है। उनके परिचय में, जो लगभग 100 पृष्ठ लंबा है, लेकिन इसमें 10 या 20 पृष्ठ हैं, यह इस बारे में है कि पॉल ने 1 और 2 तीमुथियुस को नहीं लिखा था, यह विचार कैसे उत्पन्न हुआ। और वह इसकी भारी आलोचना करते हैं और मुझे लगता है कि यह बहुत अच्छी आलोचना है।

मेरी आलोचना अधिक संक्षिप्त होगी। पॉल के इसे लिखने के पक्ष में, सबसे पहले, एक ऐतिहासिक तर्क है, जैसा कि पत्रियाँ दावा करती हैं। तीनों देहाती पत्रों का पहला शब्द ग्रीक में पॉलोस है।

पॉलोस का अनुवाद करने के लिए आपको ग्रीक जानने की ज़रूरत नहीं है, वह पॉल है। और जब हम ऐतिहासिक दस्तावेज़ पढ़ते हैं, तो सबसे पहले, हम उन्हें अंकित मूल्य पर लेते हैं, जब तक कि यह कहने के लिए बाध्यकारी कारण न हों कि यह दस्तावेज़ जाली है। मुझे नहीं लगता कि यह कहने का कोई बाध्यकारी कारण है कि यह जाली है, इसलिए हम इस दावे से शुरुआत करते हैं कि पॉल ने इसे लिखा है और यह पॉल द्वारा इन्हें लिखे जाने के पक्ष में एक तर्क है।

उसका नाम उस पर है, खासकर जब आप दूसरे तीमुथियुस के पास पहुँचते हैं, तो वहाँ बहुत सारे जीवनी संबंधी और आत्मकथात्मक विवरण होते हैं जिनका कोई मतलब नहीं है अगर पॉल ने इसे नहीं लिखा है, और यदि तीमुथियुस वह व्यक्ति नहीं है जो पहले और दूसरा तीमुथियुस उसका प्रतिनिधित्व करता है।

दूसरे, एक एक्लेसिया तर्क है, एक्लेसिया का यहाँ चर्च से संबंध है। पहली शताब्दी के उत्तरार्ध के ईसाई लेखकों में एक आम सहमति है जहाँ हम पहली बार क्लेमेंट, इग्राटियस या पॉलीकार्प जैसे लेखकों द्वारा उद्धृत देहाती पत्रों की झलक देखते हैं।

इस बात पर आम सहमति है कि पॉल ने इन्हें लिखा और चर्च की पहली 4 या 5 शताब्दियों से लेकर 5वीं शताब्दी में कम से कम जॉन क्राइसोस्टॉम तक, ये ग्रीक भाषी लोग थे और उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ, मुझे आश्चर्य है कि इन्हें पॉल कैसे कहा जा सकता है क्योंकि स्पष्टतः पॉल ने इन्हें नहीं लिखा। उन्हें ऐसा नहीं लगा कि यह पॉल द्वारा इन्हें लिखे जाने की संभावना के दायरे से बाहर है। दरअसल, उन्होंने कभी यह सवाल नहीं उठाया कि क्या पॉल ने इन्हें लिखा है? और जब लगभग 1800 वर्षों से चर्च में किसी पुस्तक के लेखकत्व के बारे में आम सहमति है और फिर अचानक एक सिद्धांत आता है कि वह उन्हें नहीं लिख सकता है, तो मुझे लगता है कि हमें इस बात के लिए बहुत मजबूत तर्क की आवश्यकता है कि फ्रेडरिक श्लेइरमाकर के आने तक हर कोई इसे क्यों नहीं लिख पाया। .

और इसलिए, उस आधार पर, मैं जर्मन विश्वविद्यालय में सर्वसम्मति के साथ जाने के बजाय पहले 1800 वर्षों के उन लोगों का पक्ष लेना चाहूंगा जिन्होंने इन पुस्तकों को पढ़ा और सोचा कि पॉल ने इन्हें लिखा है, जो वैसे बहुत नकारात्मक निकला है और विश्व ईसाई धर्म के लिए विनाशकारी क्योंकि यह बाइबल के प्रति संदेहपूर्ण दृष्टिकोण है। यह एक संशयपूर्ण व्याख्या है। इसे ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण कहा जाता है।

और ऐतिहासिक-आलोचनात्मक तत्वावधान में, बाइबल के बारे में बहुत सारी अच्छी और सच्ची बातें कही गई हैं और शब्दों के अर्थों और किताबों के अर्थों पर बहुत कड़ी मेहनत की गई है। यदि आप पश्चिम में चर्च को देखें, तो आप देखेंगे कि यह सिकुड़ गया है और सिकुड़ गया है। और जितने कम लोगों ने यह विश्वास किया है कि बाइबल सत्य है, चर्चों में उतने ही अधिक मंत्री उनकी सदस्यता कम कर रहे हैं, क्योंकि यदि यह सत्य नहीं है, तो हमें इसका पालन करने के लिए अपना जीवन क्यों समर्पित करना चाहिए? यदि पॉल ने यह नहीं लिखा, तो क्या यह संदिग्ध नहीं है? क्या यह एक तरह से बेईमानी नहीं है? और हमें बाइबल के और कितने अंशों के सत्य न होने का संदेह करना चाहिए? यह दुनिया के बड़े हिस्से में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो इस्लाम से प्रभावित हैं क्योंकि इस्लाम को यकीन है कि कुरान सच है और इस्लामी विद्वान अक्सर श्लेइरमाकर या होल्त्ज़मैन या बाउर जैसे लोगों का हवाला देते हुए तर्क देते हैं कि वे बाइबल के आधार पर संदेह करना पसंद करते हैं। जिसे मैं उदारवादी या ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण पश्चिमी विद्वता कहूंगा।

इसलिए, मैं इस विशेष मुद्दे पर ऐतिहासिक-आलोचनात्मक दृष्टिकोण, संशयवादी दृष्टिकोण का पक्ष लेने के लिए इच्छुक नहीं हूँ। सबसे पहले, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि इसका कोई आधार है, और फिर दूसरी बात, आप देख सकते हैं कि इसके परिणाम चर्च के लिए बहुत नकारात्मक रहे हैं। अब एक अंधकारपूर्ण, सैद्धान्तिक तर्क भी है।

संदेहपूर्ण दृष्टिकोण में, आप पादरी और पॉल के अन्य पत्रों और पादरी और अधिनियम की पुस्तक के बीच विभाजन पाते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अधिनियमों और पादरी के बीच बहुत अधिक सहमति है। और मुझे लगता है कि पादरी और पॉल के अन्य पत्रों के बीच काफी सहमति है।

तो, वे जो सिखाते हैं उसके आधार पर, मुझे यह कहते हुए काफी खुशी हो रही है, ठीक है, वही लेखक जिसने रोमन लिखा, जिसने कुलुस्सियन लिखा, जिसने फिलेमोन को लिखा, उसी लेखक ने 1 और 2 तीमुथियुस और टाइटस को लिखा। और फिर ग्रंथ सूची संबंधी तर्क है, ग्रंथ सूची बाइबिल का सिद्धांत या पवित्रशास्त्र का सिद्धांत है। और मैं पुष्टि करता हूँ कि सभी धर्मग्रन्थ सत्य हैं।

और हम यशायाह 55 पर वापस जा सकते हैं, कि परमेश्वर का वचन वही करता है जो वह उसे करने के लिए भेजता है। और हम 2 तीमुथियुस 3.16 का हवाला दे सकते हैं, सभी धर्मग्रंथ ईश्वर-प्रेरित हैं। यह भगवान द्वारा दिया गया है।

और पौलुस तीतुस में कहता है, परमेश्वर झूठ नहीं बोलता। और इब्रानियों का लेखक कहता है कि परमेश्वर झूठ नहीं बोलता। और हमें वास्तव में बाइबल में ऐसे किसी कथन की आवश्यकता नहीं है जो वास्तव में ऐसा कहता हो क्योंकि यह इतना स्पष्ट है कि ईश्वर की सत्यता, उन सभी बातों में अंतर्निहित है जिसकी पुष्टि पवित्रशास्त्र करता है।

भगवान वफादार है। ईश्वर निष्कलंक है। भगवान पवित्र है।

ईश्वर परिपूर्ण है। निश्चित रूप से, वह जो कुछ भी कहता है वह सच होने वाला है। लेकिन हमें ये छंद मिलते हैं जो एक सच्चे, पवित्र, धर्मी, परिपूर्ण, सत्य बोलने वाले ईश्वर और उन शब्दों के बीच संबंध की पुष्टि करते हैं जो उसने अपने भविष्यवक्ताओं और अपने प्रेरितों और यीशु को मुक्ति के लिए दर्ज करने के लिए दिए हैं। उन लोगों की रोशनी जिन्हें परमेश्वर के वचन के माध्यम से बचाने की आवश्यकता है।

इसलिए हमारे पास अंग्रेजी में इनररेंसी शब्द है, और मुझे इनररेंसी का उपयोग करने में खुशी होगी। अन्य लोगों को अचूक शब्द पसंद है। वे दो शब्द लगभग पर्यायवाची हो सकते हैं, चाहे आप जो भी शब्द पसंद करें।

हम बाइबल में सीखते हैं और हम ईसाई परंपरा में बाइबल के प्रति उच्च सम्मान रखना सीखते हैं। और बाइबल के प्रति हमारे उच्च सम्मान के आधार पर, मुझे लगता है कि पॉल द्वारा पादरी लेखन के पक्ष में हमारे पास चौथा तर्क है। तो मैं औपचारिक रूप से उसके बारे में बस इतना ही कहूंगा।

जैसे-जैसे हम देहाती पत्रियों पर अपनी दृष्टि डालते हैं, मैं यहां-वहां इस पर फिर से विचार कर सकता हूं। पास्टोरल कब लिखे गए थे? मुझे लगता है कि हम निश्चित रूप से पॉल के बाद के जीवनकाल के दौरान ही कुछ कह सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे प्रेरितों के काम की किताब के युग से आए हैं, जहां पॉल विभिन्न शहरों की यात्रा कर रहा है, और वह कुछ वर्षों के लिए इफिसस में है, और वह एक या दो साल के लिए कोरिंथ में है, या वह मैसेडोनिया की यात्रा कर रहा है और वह टाइटस और टिमोथी को कहीं छोड़ देता है।

कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि आप पादरी, अर्थात् 1 तीमुथियुस और टाइटस को फिट कर सकते हैं, आप उन्हें प्रेरितों के काम की पुस्तक में पॉल के आंदोलनों में फिट कर सकते हैं। और मैं इसका खंडन नहीं कर सकता। इसे स्पष्ट रूप से सत्यापित नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह संभव है कि पॉल ने उन्हें 55-60 रेंज में कभी लिखा हो, जो अभी भी अधिनियमों के अंतर्गत आता है।

अन्य लोग सोचते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक समाप्त होने के बाद पॉल ने देहाती बातें लिखीं और प्रेरितों के काम 28 में पॉल के रोम में रहने के बाद, उसे रिहा कर दिया गया, और फिर उसके पास कई साल हैं जहां वह यात्रा करता है, और इस समय के दौरान वह तीमुथियुस को लिखता है और वह टाइटस को लिखता है। यह शायद चर्च में सबसे प्राचीन और सबसे आम दृष्टिकोण है, कि प्रेरितों के काम 28 में पॉल की रिहाई के बाद, उसने 1 और 2 तीमुथियुस को लिखा। फिर उसे फिर से गिरफ्तार कर लिया जाता है, और उसे दूसरी बार रोम में कैद किया जाता है जहां उसे शहीद किया जाएगा, और उसकी शहादत से ठीक पहले वह 2 टिमोथी लिखता है।

तो ये वे अनुमानित तारीखें हैं जिनका उपयोग हम 1-2 तीमुथियुस और तीतुस का पता लगाने के लिए करेंगे। वह 1 तीमुथियुस क्यों लिखता है? और मैं यह प्रश्न बाद में 2 तीमुथियुस और तीतुस से पूछूंगा जब हम उनसे मिलेंगे। ठीक है, हम 1 तीमुथियुस 1.3 से देख सकते हैं, वह कहता है, जैसा

कि मैंने तुमसे आग्रह किया था जब मैं मैसेडोनिया गया था, वहां इफिसुस में रहो, ताकि तुम कुछ लोगों को आदेश दे सको कि वे अब झूठे सिद्धांत न सिखाएं।

और वह आगे बढ़ता है, और मैं इन व्याख्यानों में एनआईवी का उपयोग करूंगा। वह तीमुथियुस को देहाती कठिनाइयों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है। अब, केवल कठिनाइयाँ ही नहीं थीं, अवसर भी थे।

लेकिन मुझे लगता है कि 1 तीमुथियुस उन तनावों पर जोर देता है जिनसे तीमुथियुस गुजर रहा था। और वह चाहता है कि तीमुथियुस वहां सुसमाचार की उपस्थिति को सुरक्षित रखे, और वह इसे बढ़ाना चाहता है, क्योंकि यही मसीह के आधिपत्य का स्वभाव है। जैसे पाप की प्रकृति विस्तार करना और नष्ट करना है, वैसे ही मसीह के प्रभुत्व की प्रकृति विस्तार करना और छुटकारा दिलाना, और परिपूर्ण करना, और सुधार करना और ईश्वर की महिमा करना है।

तो यही मौका है. यह टिमोथी की कठिनाइयों का सामना करने पर बहुत अधिक केंद्रित है। और चूंकि संभवतः हर कोई जो सुसमाचार के बारे में इतना गंभीर है कि 1 तीमुथियुस पर व्याख्यान देख सकता है, यदि आप इतने गंभीर हैं, तो आप शायद कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

क्योंकि एक गंभीर ईसाई होना सदैव कठिनाइयाँ लाता है। और इसलिए, यह एक ऐसी पुस्तक है जो हमारे साथ प्रतिध्वनित होने वाली है क्योंकि हम अक्सर यह महसूस कर सकते हैं कि टिमोथी कहाँ है, और यह परिषद इतनी महत्वपूर्ण क्यों है। परिचय के माध्यम से चौथा विचार, मुझे शब्द गिनना अच्छा लगता है।

और अब हमारे पास ऐसा सॉफ्टवेयर है जिससे हम आसानी से परिष्कृत खोज कर सकते हैं। और इसलिए, मैंने प्रमुख महत्वपूर्ण शब्दों का एक चार्ट बनाया है, न कि, या ए जैसे लेख, और न ही, और, या तो, या लेकिन जैसे संयोजन। लेकिन महत्वपूर्ण शब्द, आमतौर पर संज्ञा या क्रिया।

और मैं यहां जो सोच रहा हूँ वह यह है कि आवृत्ति का तात्पर्य फोकस से है। कोई लेखक सिद्धांत रूप में किसी चीज़ के बारे में जितना अधिक बात करता है, संभवतः इसका अर्थ यह होता है कि दस्तावेज़ उसी पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। और मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि साहित्य में कई बार लोगों का ध्यान पृष्ठभूमि सामग्री पर केंद्रित हो जाता है।

और लेखक जिस बारे में सबसे ज़्यादा बात करते हैं उस पर ज़्यादा बात नहीं होती। और आप नए नियम के सभी पत्रों में पाएंगे, लेकिन विशेष रूप से पॉल के साथ, भगवान किस बारे में सबसे अधिक बात करते हैं, क्षमा करें, पॉल जिस बारे में सबसे अधिक बात करता है वह सामाजिक सेटिंग नहीं है, या वह कारण जिसके बारे में वह लिखता है, या कुछ संघर्ष विभिन्न पार्टियों के बीच. वह समाजशास्त्र की बात नहीं करते, वह ईश्वर की बात करते हैं।

और जैसा कि आप चार्ट को देखते हैं, और मैंने ईश्वर के लिए शब्दों को पीला कर दिया है, आपको ईश्वर 22 बार घटित होता हुआ मिला है। आपके पास क्राइस्ट और जीसस आवृत्ति में चौथे और पांचवें नंबर पर आते हैं, और वे अक्सर एक साथ सूचीबद्ध होते हैं। और फिर बाद में, आवृत्ति में 15वीं बार, आपने भगवान का छह बार उल्लेख किया है।

तो, जब आप उन्हें जोड़ते हैं, तो आपको भगवान शब्द की लगभग 40 घटनाएँ या ठीक 40 घटनाएँ मिलती हैं। और ऐसा नहीं है कि तीमुथियुस को परमेश्वर या यीशु के बारे में सीखने की ज़रूरत है। उसे इन चीजों में सबक की ज़रूरत नहीं है।

यह सिर्फ इतना है कि पॉल तीमुथियुस की मदद करना चाहता है, चाहे उसकी कठिनाइयाँ हों, वह बार-बार ईश्वर या ईसा मसीह की ओर लौटना चाहता है। क्योंकि वह वही है जिसकी ओर हम देखते हैं। वह वही है जिसके लिए तीमुथियुस परिश्रम करता है।

वह वही है जो टिमोथी की सफलता को बनायेगा या बिगाड़ेगा। और वह विश्वास के माध्यम से होगा। तीमुथियुस को विश्वास की आवश्यकता है।

उसे भगवान पर भरोसा रखने की ज़रूरत है। और यह दूसरा सबसे अधिक बार आने वाला शब्द है। और वह विश्वास अक्सर उन कार्यों का रूप ले लेता है जिन्हें ईश्वर निर्धारित करता है, जिसके लिए सुसमाचार कहता है।

और अक्सर इन्हें काम कहा जाता है, और ये अच्छे काम हैं। और भी बहुत सी अच्छी चीज़ें हैं जिनके बारे में पॉल बात करता है। तो, वह देहाती में 16 बार अच्छा या सुंदर या महान शब्द का उपयोग करता है।

और फिर आप देख सकते हैं कि नंबर छह वफादार है। सात और आठ, पुरुष या व्यक्ति और महिला या पत्नी। और फिर क्रमांक 17 में पाँच बार उसने पुरुष या पति का उल्लेख किया है।

पादरी लोगों के साथ-साथ भगवान पर भी केंद्रित हैं। और यह उनकी आवृत्ति सूची में परिलक्षित होता है। और फिर हमें नंबर नौ मिलता है, शिक्षण, डिडास्कालिया।

और हम बार-बार देखेंगे कि पादरी की भूमिका केवल शिक्षण से नहीं, बल्कि काफी हद तक शिक्षण से पूरी होती है। पादरी शिक्षक हैं। याद रखें कि पादरी शब्द अंग्रेजी में और लैटिन में शेफर्ड शब्द के साथ सजातीय है।

एक पादरी एक चरवाहा है। एक पादरी कोई नौकरशाह नहीं है। एक पादरी शासक नहीं होता, हालाँकि वह नेतृत्व करता है।

लेकिन पादरी वह है जो चरवाहा करता है। और हमारी परंपरा में कोई है जिसे अच्छा चरवाहा कहा जाता है। उसका नाम यीशु है।

और जब आप सुसमाचार को देखते हैं, तो यीशु का मुख्य कार्य शिक्षा देना था। वह कानून नहीं बना रहे थे। वह लोगों को गिरफ्तार नहीं कर रहा था।

वह आंदोलन नहीं कर रहे थे. वह लोगों को निर्देश दे रहे थे. और जब यीशु पृथ्वी पर थे तब लोगों के प्रति उनकी सेवा के मुख्य जोर को सारांशित करने के लिए आप शिक्षण शब्द का उपयोग कर सकते हैं।

उन्होंने उन्हें निर्देश दिया. और अंग्रेजी में हम अक्सर, यह एक औपचारिक शब्द की तरह है, लेकिन हम अंडर-शेफर्ड के बारे में बात करेंगे। वहाँ महान चरवाहा है और फिर उसके अधीन चरवाहे हैं और फिर वे पादरी हैं।

और पादरी पढ़ाते हैं। तो इसीलिए वह शब्द देहातियों में प्रमुख है। फिर वे क्या सिखाते हैं और उसका प्रभाव क्या होना चाहिए? और अब हम एक बहुत ही विशिष्ट शब्द, यूसेबिया, पर आते हैं, जिसका अनुवाद हम ईश्वरत्व के रूप में कर सकते हैं।

और यह पॉल के अन्य पत्रों में नहीं होता है. कोई भी वास्तव में यह नहीं समझ सकता है कि पॉल के अन्य पत्रों में ऐसा क्यों नहीं होता है, लेकिन मैं कहूंगा कि यदि आप साहित्य में जाएंगे, तो आप देखेंगे कि पॉल के प्रत्येक पत्र में ऐसे शब्द हैं जो किसी अन्य पत्र में प्रकट नहीं होते हैं। और मुझे लगता है कि इससे यह संकेत मिलता है कि वह बड़ी शब्दावली वाला एक चतुर व्यक्ति था।

और जब उन्होंने कुछ पत्र लिखे, तो उन्होंने कुछ शब्दों का प्रयोग किया। और जब उन्होंने अन्य पत्र लिखे, तो उन्होंने अन्य शब्दों का प्रयोग किया। पॉल की बहुत सारी किताबें हैं जिनमें क्रॉस शब्द का उल्लेख नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि, वह अब क्रॉस में विश्वास नहीं करता था या किसी और ने ये पत्र लिखे थे।

बात बस इतनी है कि अलग-अलग अक्षर अलग-अलग शब्दावली को जन्म देते हैं। देहाती पत्रों में, वह इस बात से बहुत चिंतित हैं कि लोग एक विशेष प्रकार की धर्मपरायणता और सत्यनिष्ठा को प्रतिबिंबित करते हैं। और हम उनकी टिप्पणी में पवित्रता शब्द का भी उपयोग कर सकते हैं।

और इसलिए, यह शब्द 1 तीमुथियुस में बार-बार आता है, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसे बार-बार देखेंगे। तब लोगो शब्द आता है, और अक्सर यह ईसाई संदेश को संदर्भित करता है। हमेशा नहीं, लेकिन अक्सर.

अध्याय पाँच में विधवाओं का प्रमुखता से उल्लेख किया जाएगा। यह एक महान अध्याय है. फिर सत्य और काम और प्रेम।

यह रोजमर्रा की ईसाई शब्दावली, रोजमर्रा की देहाती देखभाल और रोजमर्रा के चर्च जीवन का हिस्सा है। आप चाहते हैं कि चीजें सच हों। आप नहीं चाहते कि हर जगह असत्य और झूठ फैला रहे।

आप चाहते हैं कि वहाँ प्रभु के लिये परिश्रम हो। वह एर्गन है, काम। और यह सब सहना।

और पॉल कहता है, वह अध्याय एक में कहने जा रहा है, वह तीमुथियुस से जो कह रहा है उसका पूरा लक्ष्य अस्पष्ट है। यह प्यार है। जैसा कि जॉन कहते हैं, ईश्वर प्रेम है।

और वह सब कुछ जो सुसमाचार लोगों में लाता है और वह सब कुछ जो सुसमाचार के माध्यम से ईश्वर की कृपा लोगों में डालता है, वह सब अंततः प्रेम के अंतर्गत रखा जा सकता है। और क्योंकि यह इतना स्व-स्पष्ट है, और फिर, क्योंकि यह एक औपचारिक नई ईसाई निर्देश योजना की तरह नहीं है, वह प्यार के बारे में ज्यादा बात नहीं करता है। लेकिन वह जिन स्थानों के बारे में बात करता है वह हमें याद दिलाता है कि पॉल या टिमोथी जैसे किसी व्यक्ति पर सुसमाचार का आंतरिककरण कितना मौलिक प्रभाव डालता है।

वे उन लोगों की सेवा में अपना जीवन क्यों दे रहे थे जो उनकी जातीयता के भी नहीं थे? याद रखें, पॉल और तीमुथियुस दोनों यहूदी हैं, और वे गैर-यहूदी परिवेश में काम कर रहे हैं। वे ऐसा क्यों करेंगे? खासकर इसलिए क्योंकि रोमन दुनिया में लगभग 90% गैर-यहूदी थे, शायद केवल 8 से 10% यहूदी थे, और रोमन साम्राज्य में यहूदियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। और वे वहां एक गैर-यहूदी परिवेश में थे, दूसरों की देखभाल कर रहे थे, दूसरों को सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, अक्सर खतरे में पड़ रहे थे, खासकर बहुसंख्यक आबादी द्वारा, लेकिन अल्पसंख्यक आबादी द्वारा भी, क्योंकि उनके साथी यहूदी अक्सर उनकी शिक्षा को स्वीकार नहीं करते थे यीशु पर।

उन्होंने यह सब क्यों सहा? और उत्तरों में से एक है, ठीक है, प्रेम। यही कारण है कि ईश्वर एक ऐसी दुनिया को झेलता है जो बड़े पैमाने पर उसके खिलाफ विद्रोह करती है। परमेश्वर ने संसार से बहुत प्रेम किया।

और इसलिए, तीमुथियुस परमेश्वर की इस मूलभूत विशेषता को दर्शाता है कि सुसमाचार ने पॉल में उसके रूपांतरण में प्रत्यारोपित किया, और पॉल ने अपने मंत्रालय के माध्यम से प्रकट किया, और वह इस पत्र को लिखते समय भी प्रकट होता रहता है। हमें इफिसुस शहर के बारे में कुछ शब्द कहने की जरूरत है। हम ठीक से नहीं जानते कि तीमुथियुस को यह पत्र इफिसुस में कब मिला, लेकिन हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में जाकर देख सकते हैं कि वहाँ एक यहूदी आराधनालय था, और संभवतः वहाँ कई यहूदी आराधनालय थे।

इफिसुस एक बहुत बड़ा नगर था। यह आर्टेमिस या डायना के मंदिर का स्थान भी था, और यह प्राचीन दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक था। मैं इफिसुस को रोमन साम्राज्य का डिज़्नी वर्ल्ड कहता हूँ।

लोग वहां यात्रा करते थे क्योंकि यह इस भव्य मंदिर का स्थान था, लेकिन साथ ही यह जादू और गुप्त प्रथाओं का केंद्र भी था, और मैं उस पर वापस आऊंगा। अपुल्लोस प्रेरितों के काम, अध्याय 18 के अंत में जॉन द बैपटिस्ट के माध्यम से मसीह, मसीहा के बारे में सिखाता है, और मुझे इन छंदों को पढ़ने की जरूरत है। अधिनियम, अध्याय 18, श्लोक 24 से 26 तक।

आज यहाँ उमस है इसलिए ये पत्रे आपस में चिपके हुए हैं। यह अधिनियम 18:24 है। अपुल्लोस नाम का एक यहूदी, जो अलेक्जेंड्रिया, जो मिस्र में है, का मूल निवासी, इफिसुस में आया।

वह शास्त्रों का गहन ज्ञान रखने वाला एक विद्वान व्यक्ति था। उसे प्रभु के मार्ग की शिक्षा दी गई थी, और वह बड़े उत्साह से बोलता था और यीशु के बारे में सटीक शिक्षा देता था, हालाँकि वह केवल जॉन के बपतिस्मा के बारे में जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा।

जब प्रिसिला और अक्विला ने उसकी बात सुनी, तो उन्होंने उसे अपने घर आमंत्रित किया और उसे परमेश्वर का मार्ग और अधिक पर्याप्त रूप से समझाया। फिर वह घूमता है और अखाया या कोरिंथ की ओर बढ़ता है, लेकिन फिर पॉल इफिसुस में आता है। आप इसके बारे में अधिनियम, अध्याय 19 में पढ़ सकते हैं।

वास्तव में, इफिसुस पर सबसे अच्छी टिप्पणी अधिनियमों का अध्याय 19 है। यदि आप इफिसियों को पढ़ रहे हैं या यदि आप 1 तीमुथियुस को पढ़ रहे हैं, तो अपने आप को प्रेरितों के काम, अध्याय 19 में डुबो दें, क्योंकि हम सीखते हैं कि पवित्र आत्मा कैसे आई और अपोलोस ने अपने शिक्षण के माध्यम से जिस छोटे कोशिका समूह की स्थापना की, उसने नया जीवन प्राप्त किया। जब पॉल आया, और मैं यहाँ कुछ छंद पढ़ना चाहता हूँ, अधिनियम, अध्याय 19, पद 2 से शुरू करते हुए, पॉल ने उनसे पूछा, क्या आपने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा प्राप्त किया था? उन्होंने उत्तर दिया, नहीं, हमने तो यह भी नहीं सुना कि पवित्र आत्मा है।

तो पौलुस ने पूछा, तो फिर तुम्हें क्या बपतिस्मा मिला? जॉन का बपतिस्मा, उन्होंने उत्तर दिया। पॉल ने कहा कि जॉन का बपतिस्मा पश्चात्ताप का बपतिस्मा था। उसने लोगों से कहा कि वे उसके बाद आने वाले, अर्थात् यीशु पर विश्वास करें।

यह सुनकर, उन्होंने प्रभु यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया। जब पौलुस ने उन पर हाथ रखा, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे भिन्न भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। कुल मिलाकर लगभग 12 आदमी थे।

और वह 12 शायद आकस्मिक नहीं है, यह शायद प्रेरितिक 12 के साथ प्रतिध्वनित हो रहा है। इफिसुस में जो कुछ हुआ वह पॉल की पुष्टि करता है, भगवान ने प्रेरितों के काम 2 में यरूशलेम में क्या किया था। उसने अपनी पवित्र आत्मा भेजी। और बहुत से यहूदी विश्वासियों ने सोचा होगा, अच्छा, यह यरूशलेम है, यह वह स्थान है जहाँ भगवान की पवित्र आत्मा भेजी जाती है।

और यह सोचने का प्रलोभन होता कि यही एकमात्र स्थान है जहाँ चर्च वास्तव में चर्च हो सकता है। लेकिन प्रेरितों के काम, अध्याय 8 में, फिलिप्पुस के माध्यम से, सामरिया में यीशु के विश्वासियों पर पवित्र आत्मा की वही अभिव्यक्ति है। सामरिया कोई ऐसी जगह नहीं है जिसके बारे में बहुत से यहूदियों या प्रारंभिक यहूदी विश्वासियों ने सोचा होगा कि यह ईश्वर की पवित्र आत्मा की उपस्थिति का केंद्र होगा।

उन्होंने पवित्र आत्मा को पवित्र शहर से जोड़ा होगा। लेकिन प्रेरितों के काम 8 में, हम परमेश्वर को सामरिया में सुसमाचार के माध्यम से अपनी पवित्र आत्मा की उपस्थिति को प्रकट करते हुए देखते हैं। और फिर प्रेरितों के काम 10 और 11 में, हम उसे जोप्पा में कुरनेलियुस के साथ अपनी पवित्र आत्मा की उपस्थिति प्रकट करते हुए देखते हैं, जो पूरी तरह से अन्यजातियों का क्षेत्र है।

और इसलिए प्रेरितों के काम में चौथी बार, हम पवित्र आत्मा की इन अभिव्यक्तियों को देखते हैं। और इससे दो बातों की पुष्टि होती है। नंबर एक, पॉल का मंत्रालय, जो पहले से ही दशकों से चल रहा था।

लेकिन जहां तक हम जानते हैं, यह पहली बार है जब पॉल के हाथों इस तरह की अभिव्यक्ति हुई। और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि यह इफिसस में है क्योंकि इफिसस एक राक्षसी गढ़ है। और मुझे लगता है कि यह बहुत उपयुक्त था कि पवित्र आत्मा की यह ताजा अभिव्यक्ति हो।

पेंटेकोस्ट के लगभग 25 साल बाद, पवित्र आत्मा की यह ताजा अभिव्यक्ति हुई है जो इफिसस में अन्यजातियों के लिए, बल्कि इफिसस में यहूदियों के लिए भी मजबूत करती है, कि वही ईश्वर, वही प्रभाव और वही सुसमाचार जिसने यरूशलेम में इस आंदोलन की शुरुआत की थी। पेंटेकोस्ट, वही परिसर इफिसस में काम कर रहा है। इसलिए, मैंने कई बार शैतानी और जादू-टोना का उल्लेख किया है। तंत्र-मंत्र का मतलब केवल छुपी हुई काली कलाएँ, काला जादू है।

इफिसस इस प्रकार की मान्यताओं और कार्यों के अभ्यास का केंद्र था। सबसे पहले, अधिनियम 19 में, श्लोक 13 से शुरू करते हुए, हमें याद दिलाया जाता है, कि जब पॉल सेवा कर रहा था, तो यहूदी बुरी आत्माओं को बाहर निकाल रहे थे। इसलिए यहूदी ओझाओं ने, और ऐसा कहा जाता है, उन्होंने उन लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का आह्वान करने की कोशिश की जो दुष्टात्मा से ग्रस्त थे।

और वे कहेंगे, जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, उसी के नाम पर मैं तुम्हें बाहर आने की आज्ञा देता हूँ। और ये यहूदी प्रधान याजक स्केवा के सात पुत्र थे। और आप वहां श्लोक 15 और 16 में पढ़ सकते हैं, आप देख सकते हैं कि कैसे स्पष्ट रूप से शैतान इन नकली लोगों द्वारा धकेले जाने से थक गया था।

और इसलिए, उसने एक आदमी में दुष्ट आत्मा भर दी जिसने सातों भाइयों पर कब्ज़ा कर लिया और उन्हें इतनी पिटाई की कि वे नग्न होकर और खून बहाते हुए घर से बाहर भाग गए। तो, यह कोई बहुत शक्तिशाली जादू है जो काम कर रहा है। और यह कहानी फैल गई, यह वृत्तान्त फैल गया, और यह कहता है, कि जब यह बात इफिसस में रहने वाले यहूदियों और यूनानियों को मालूम हुई, तो वे सब भय से घबरा गए।

और प्रभु यीशु का नाम उच्च सम्मान में रखा गया। तुम व्यर्थ में वह नाम मत लो। आपके साथ कुछ बुरा हो सकता है।

और फिर यह कहता है, कि जो लोग विश्वास करते थे उनमें से बहुत से लोग अब आए और खुले तौर पर कबूल किया कि उन्होंने क्या किया है, क्योंकि बहुत से लोग इन जादुई कलाओं में शामिल थे। यह संस्कृति का हिस्सा था। ठीक उसी तरह जहां मैं अभी रह रहा हूँ, संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिक से अधिक लोग जुए में शामिल हो रहे हैं।

जुआ उस पैसे का अच्छा प्रबंधन नहीं है जो भगवान अपने लोगों को उनके समर्थन के लिए और दुनिया में भगवान के काम के समर्थन के लिए देता है। लेकिन यह हिट है और कई बार लोग इसे छिपा लेते हैं। या वे किसी प्रकार की दवाओं का उपयोग कर रहे होंगे, और वे जानते हैं कि शायद उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, इसलिए वे इसे छिपाते हैं।

लेकिन यह संस्कृति का हिस्सा है। और यह संस्कृति का हिस्सा है जो अक्सर चर्च का हिस्सा होता है जब इसे चर्च में नहीं होना चाहिए। खैर, इफिसुस में यही सच था।

लोग राक्षसी और गुप्त अनुष्ठानों में शामिल थे। यह कहता है कि कुछ लोगों ने जादू-टोना किया था, यह अधिनियम 19.19 है, उन्होंने अपनी पुस्तकें एक साथ लायीं और उन्हें सार्वजनिक रूप से जला दिया। जब उन्होंने खर्रे का मूल्य गिना, तो कुल 50,000 द्राखमास निकले।

यह सौभाग्य है। इस तरह, प्रभु का वचन व्यापक रूप से फैल गया और शक्ति में वृद्धि हुई। मुझे पॉल की वह बात याद आती है जब उसने इफिसियों को लिखा था, हमारा संघर्ष मांस और खून के खिलाफ नहीं है, बल्कि शासकों के खिलाफ है, अधिकारियों के खिलाफ है, इस अंधेरे दुनिया की शक्तियों के खिलाफ है, और स्वर्गीय बुराई की आध्यात्मिक ताकतों के खिलाफ है। दायरे।

उसने इफिसियों को यह लिखा क्योंकि वह इफिसुस में रहता था, उसने इन चीजों को देखा था, और वह जानता था कि इफिसियों को भगवान के कवच पहनने की जरूरत है क्योंकि यह एक ऐसी दुनिया है जिसमें कई अंधेरे और शक्तिशाली ताकतें हैं जो भगवान के काम के खिलाफ लड़ रही हैं और परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध। मैं अधिनियम 19 के शेष भाग के बारे में नहीं बताऊंगा, लेकिन अधिनियम 19 का एक बहुत बड़ा हिस्सा इस बात के लिए समर्पित है कि एनआईवी अपने शीर्षक में क्या कहता है, यह एक दंगा है, या इफिसस में दंगा है। जैसे ही आबादी में सुसमाचार का प्रभाव हुआ, जो लोग चाँदी से बनी मूर्तियाँ खरीदकर देवताओं की पूजा करते थे, उन्होंने इन मूर्तियों को खरीदना छोड़ दिया क्योंकि वे ईसाई बन गए थे और वे जानते थे कि मूर्तिपूजा एक पाप है।

प्रारंभिक ईसाई बाइबिल में मुझसे पहले आपके पास कोई अन्य देवता नहीं होगा। यह पहली आज्ञा है। और इसलिए सुनार, वे लोग जो मूर्तियाँ बनाते थे, बहुत परेशान थे क्योंकि वे पैसे खो रहे थे, और इसलिए उन्होंने विद्रोह और दंगा भड़काया, और कुछ ईसाइयों को पीटा गया, इत्यादि।

लेकिन निष्कर्ष यह है कि इफिसस के चर्च में मसीह और सुसमाचार के प्रति न केवल यहूदी प्रतिरोध था, बल्कि बुतपरस्त प्रतिरोध, राजनीतिक प्रतिरोध और व्यावसायिक प्रतिरोध भी था। सामान्य तौर पर, संस्कृति इन प्रति-सांस्कृतिक लोगों से बहुत परेशान थी। और भगवान कठिन क्षेत्रों में महान कार्य करने से प्रसन्न होते हैं।

टर्टुलियन की प्रसिद्ध कहावत है, शहीदों का खून चर्च का बीज है। और भगवान का शुक्र है, सुसमाचार प्रतिरोध का परिणाम हमेशा शहादत नहीं होता है, लेकिन चर्च के इतिहास में, यह अक्सर होता है। जैसा कि हम आज खड़े हैं, चर्च का ऐसा दौर कभी नहीं रहा जब हर दिन इतने अधिक लोग अपने ईसाई धर्म स्वीकारोक्ति के लिए मरते हों।

गॉर्डन कॉनवेल सेमिनरी में वैश्विक ईसाई धर्म के अध्ययन केंद्र ने गणना की है कि इन दशकों में, 21वीं सदी के शुरुआती दशकों में, और 20वीं सदी के मध्य तक अनुमान लगाते हुए, हम बात कर रहे हैं कि प्रति वर्ष लगभग 90,000 ईसाइयों की मृत्यु हो जाती है। उत्पीड़न. और यह प्रतिदिन 247 है। तो, कुछ दिन कम, कुछ दिन अधिक, लेकिन संभवतः ऐसा कोई दिन नहीं है जब नाइजीरिया में, या चीन में, या मिस्र में, या कहीं और ईसाइयों को उनके ईसाई स्वीकारोक्ति के संबंध में मौत की सजा नहीं दी जा रही हो।

हाल का इतिहास दिखाता है कि जितना अधिक यह होता है, जबकि यह दुखद है, और जबकि हम इस पर शोक व्यक्त करते हैं, और जबकि शायद हममें से कोई भी आज ईसाई स्वीकारोक्ति के लिए स्वेच्छा से मौत के घाट नहीं उतर रहा है, फिर भी, भगवान संख्यात्मक रूप से और गहराई से विकास लाते हैं उसके लोग जब शैतान इतना बेकाबू हो जाता है कि वह परमेश्वर के लोगों का वध करना शुरू कर देता है। परमेश्वर पीछे धकेलता है, और परमेश्वर इफिसुस को पीछे धकेल रहा था। और मुझे लगता है कि उस तनाव के कारण ही टिमोथी को इतनी सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि यह चर्च के इतिहास में एक बात है, कि अंधेरे की शक्तियां प्रबल होने की कोशिश करती हैं, और भगवान अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ाते हैं और कहते हैं, ठीक है, ऐसा नहीं होने वाला है यहाँ होता है।

लेकिन फिर वह अपने सेवकों को खड़े होने और गिने जाने के लिए, और उनके पुशबैक का हिस्सा बनने के लिए बुलाता है, और यह बहुत चुनौतीपूर्ण और कठिन हो सकता है। परिचय के बस कुछ और बिंदु। टिमोथी के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

उसका नाम देहाती पत्रों में चार बार बताया गया है, और अधिनियमों में, हमें याद दिलाया जाता है कि वह एक शिष्य था जिसकी माँ यहूदी थी, लेकिन जिसका पिता एक बुतपरस्त, यूनानी था। और रब्बी गणना में, रब्बी मानते हैं कि आप वही हैं जो आपकी माँ हैं। तो, इस हिसाब से, जब मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में हूँ, मैं कनाडाई हूँ क्योंकि मेरी माँ का जन्म कनाडा में हुआ था।

और यहूदी रब्बी ने कहा, ठीक है, यदि तुम एक यहूदी माँ से पैदा हुए हो, तो तुम यहूदी हो, और तीमुथियुस एक यहूदी माँ से पैदा हुआ था। इसके अलावा, 2 तीमुथियुस में, पॉल ने अपनी माँ और अपनी दादी से अपने पालन-पोषण पर जोर दिया और संकेत दिया कि वे यहूदी थे और उन्होंने बचपन से ही धर्मग्रंथों, यानी पुराने नियम के धर्मग्रंथों में विश्वासपूर्वक उसका पालन-पोषण किया। तो, हम एकत्रित होते हैं, क्योंकि वह जिस शहर से था, लुस्त्रा, लिस्ट्रा, उन शहरों में से एक है, जिन्हें पॉल की पहली मिशनरी यात्रा में अधिनियम 13 और 14 में प्रचारित किया गया था।

हालाँकि तीमुथियुस वहाँ दिखाई नहीं देता है, लेकिन यही वह समय रहा होगा जब उसकी माँ, उसकी दादी और उसने सुसमाचार सुना होगा। और प्रेरितों के काम 16 में, पॉल ने उसे दूसरी मिशनरी यात्रा पर उसके और सीलास के साथ जाने के लिए कहा। और आपकी याददाश्त के लिए, अधिनियम 13 और 14 पहली मिशनरी यात्रा है।

अधिनियम 15:36, यरूशलेम परिषद के बाद, अध्याय 18, श्लोक 22 तक, दूसरी मिशनरी यात्रा है। और तीसरी मिशनरी यात्रा प्रेरितों के काम 18:23 से है, जब तक कि पॉल प्रेरितों के काम

21:17 में यरूशलेम नहीं लौट आता। टिमोथी दूसरी मिशनरी यात्रा में दृश्य में प्रवेश करता है, और वह जीवन भर पॉल के साथ रहता है।

जब वह शारीरिक रूप से पॉल के साथ नहीं होता है, तो वह वैचारिक या मिशनात्मक रूप से पॉल के साथ होता है क्योंकि पॉल उसे विभिन्न कार्यों पर भेजता है। या, जैसा कि 1 तीमुथियुस के मामले में है, वह उसे पीछे छोड़ देता है और आगे बढ़ जाता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि तीमुथियुस पॉल के अधिकांश मंत्रालय में उसका दाहिना हाथ है।

मैं आपको यह तालिका नहीं सुनाऊंगा, लेकिन मेरे पास एक तालिका है जो इस टिप्पणी में भी मौजूद है। मैंने टिमोथी और टाइटस को लिखे पत्रों पर एक टिप्पणी लिखी है। और मुझे लगता है कि यह लगभग सवा लाख शब्द हैं।

और मुझे लगता है कि मैं एक मिनट में लगभग 125 शब्द बोलता हूँ। इसलिए, मैं आपको यह टिप्पणी पढ़ सकता हूँ, हम यहां एक या दो सप्ताह के लिए रह सकते हैं, या मैं इन व्याख्यानों में इसे संक्षेप में बता सकता हूँ कि मैं क्या करने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन मेरे पास उस टिप्पणी में एक चार्ट है जिसमें कालानुक्रमिक रूप से टिमोथी के सभी उल्लेख हैं।

और वे 50 ई.पू. की शुरुआत में शुरू होते हैं जहां पॉल थिस्सलुनिकियों को लिखते हैं। जब वह अपना पत्र शुरू करता है, तो वह थिस्सलुनिकियों की कलीसिया को पॉल, टाइटस और टिमोथी कहता है। और 1 थिस्सलुनीकियों 3 में, वह कहता है, हमने तीमुथियुस को भेजा।

और 2 थिस्सलुनीकियों में, 1 कुरिन्थियों में, 2 कुरिन्थियों में, रोमियों में, रोमियों के अंत में, रोमियों 16:21 में तीमुथियुस के बारे में और अधिक सन्दर्भ, मेरा सहकर्मी तीमुथियुस आपको अपना नमस्कार भेजता है। और यह लगभग 57 ई. में होगा जब पॉल अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा समाप्त कर रहा होगा। फिलिप्पियों ने पहले पद में तीमुथियुस का उल्लेख किया है, फिलिप्पियों के लिए पॉल और तीमुथियुस।

फिलिप्पियों 2 में उसकी सराहना की गई है। उसका उल्लेख कुलुस्सियों अध्याय 1 में किया गया है। उसका उल्लेख फिलेमोन अध्याय 1 में किया गया है। इसलिए, तीमुथियुस का नाम पॉल के आठ पत्रों में प्रकट होता है। और निःसंदेह, उसे दो देहातियों में संबोधित किया गया है। और इसका मतलब यह है कि केवल तीन पॉलिन अक्षरों में टिमोथी का नाम नहीं है।

गलातियों, इफिसियों और तीतुस ने हमें तीमुथियुस का नाम नहीं दिया। लेकिन, हमारे पास जो संदर्भ हैं, उनसे हम कह सकते हैं कि बहुत कम, यदि कोई है, तो टिमोथी की तरह वर्षों से पॉल की गतिविधियों और उनकी शिक्षाओं के बारे में जानकारी रखने वाले लोग थे। यदि कोई दूसरा है, या यदि कोई उम्मीदवार है जो यहां नामित होने के लिए प्रतिस्पर्धा करेगा, तो वह ल्यूक होगा।

ल्यूक भी पॉल का यात्रा साथी और पॉल का विश्वासपात्र था, लेकिन वह तीमुथियुस की तरह पादरी नेता नहीं था। ऐसे शायद ही कोई लोग थे, यदि कोई थे, तो ऐसे लोग थे जो पॉल के प्रचार और चर्चों की परिपक्वता में इतनी निकटता से शामिल थे। तीमुथियुस और पॉल ने सुसमाचार सेवा के लिए एक साझा आह्वान किया।

उन्होंने खाइयों में पसीना बहाने का नाटक साझा किया। और संभवतः आप में से कुछ लोग इन व्याख्यानों को उन स्थानों पर लाइव देखेंगे जहां आपको ईसाई होने के कारण गिरफ्तार किया जा सकता है। और एडेनालाईन के बारे में, और आप डर के बारे में जानते हैं, और आप जानते हैं कि आपको चीजों को कैसे छिपाना है, और आप कैसे नहीं चाहते कि खोजा जाए।

और आप इसे स्वीकार करना पसंद नहीं करते हैं, लेकिन आप मंडली में नए सदस्यों या आगंतुकों के बारे में हमेशा संदिग्ध रहते हैं क्योंकि वे सुरक्षा लोग हो सकते हैं। और आगे चलकर वे आपको बहुत दुःख पहुंचा सकते हैं। तीमुथियुस इस प्रकार की सभी बातों के बारे में जानता था क्योंकि उसने वर्षों तक पॉल के साथ बहुत कठिन स्थानों में सेवा की थी और उस पर बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ आ गई थीं।

नतीजतन, जब हम 2 टिमोथी पहुंचेंगे, तो हम इस तरह की चीजें देखेंगे। 2 तीमुथियुस 1:8 में पौलुस लिखता है, हमारे प्रभु की या मुझ से जो उसके बन्दी की गवाही हुई है, उस से लज्जित न होना। परमेश्वर की शक्ति से सुसमाचार के लिए कष्ट सहने में मेरे साथ शामिल हों।

2 तीमुथियुस 1:12 में, वह कहता है, मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ, वह इसी कारण से हो रहा है, तौभी यह लज्जा का कारण नहीं है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं ने किस पर विश्वास किया है, और मुझे निश्चय है कि वह मेरी रक्षा करने में समर्थ है।' हमने उस दिन तक उसे सौंपा है। और फिर 2 तीमुथियुस 3:12 में, जो कोई भी मसीह यीशु में भक्तिपूर्ण जीवन जीना चाहता है, उसे सताया जाएगा। तो, ये वो बातें हैं जिन्हें पॉल ने नए विश्वासियों के साथ भी साझा किया।

जब आप 1 थिस्सलुनीकियों और 2 थिस्सलुनीकियों को पढ़ते हैं, तो आप देखेंगे कि वह कहता है, तुम जानते थे कि यह उत्पीड़न जो तुम सह रहे हो, आएगा क्योंकि मैंने तुम्हें शुरू से ही बताया था कि जब हम मसीह की सेवा करेंगे, तो सुसमाचार का विरोध होगा। लेकिन तीमुथियुस इसके माध्यम से जी चुका था। उसे इसके बारे में पता था।

वह एक अनुभवी अनुभवी व्यक्ति थे। और इसलिए, इन लोगों के बीच एक गहरा बंधन है जैसा कि हम 1 और 2 तीमुथियुस पढ़ते हैं, और उस मामले के लिए, तीतुस 2। यह एक ऐसा बंधन है जो सुसमाचार लोगों के बीच बनाता है, सबसे पहले, मसीह में संगति के कारण। लेकिन दूसरी बात, शादी की तरह ही इसमें भी बहुत खुशी होती है।

लेकिन शादी में भी वर्षों के दौरान बंधन गहरा होता है क्योंकि आप एक साथ पीड़ा सहते हैं। और विशेष रूप से यदि आप एक ईसाई हैं, तो आप मसीह में एक-दूसरे के प्रति प्रतिबद्ध रहने और अपने दैनिक जीवन और मंत्रालयों और कर्तव्यों में जो भगवान आपको देते हैं, मसीह के प्रति प्रतिबद्ध रहने की कृपा पाते हैं। और यह एक अटूट बंधन बनाता है जहां आप उस व्यक्ति के प्रति मृत्यु तक वफादार रहते हैं।

खैर, तीमुथियुस और पॉल मरते दम तक परमेश्वर के प्रति कितने वफादार रहे और इफिसुस और अन्य जगहों पर परमेश्वर के साथ सह-मंत्रियों, सह-श्रमिकों के रूप में एक-दूसरे के प्रति कितने वफादार रहे? मैं केवल देहाती पत्रियों की एक विशिष्ट विशेषता की ओर आपका ध्यान आकर्षित

करके अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। और यह उन विशिष्टताओं में से एक है जिसके बारे में आलोचक कहेंगे, ठीक है, हम इसे अन्य पॉल के पत्रों में नहीं पाते हैं, इसलिए इसका मतलब यह होना चाहिए कि ये पत्र पॉल के नहीं हैं। लेकिन किसी कारण से, जब पॉल पादरी लिखते हैं, तो वह इस मुहावरे का उपयोग करते हैं, लोगो पिस्टोस।

लोगो शब्द है, और फिर पिस्टोस का अर्थ है वफादार। तो, जिस तरह से ग्रीक काम करता है, आपको हमेशा क्रियाओं का उपयोग करने की ज़रूरत नहीं है। आप बस दो संज्ञाएं कह सकते हैं और आपको एक वाक्य मिलता है, या इस मामले में, एक संज्ञा और एक विशेषण।

तो, लोगो पिस्टोस, इसका मतलब वफादार शब्द है। और इसका क्या मतलब है इस पर किताबें लिखी गई हैं। और, किसी ने भी हर किसी को इस बात पर आश्चर्य नहीं किया है कि वास्तव में इसका क्या मतलब है।

लेकिन मैं इसे एक तरह की कहावत के रूप में सोचना पसंद करता हूँ जो उस समय पॉल और शायद पॉल और उसके तत्काल सहकर्मियों के लिए प्रचलित थी, आप इसे बैंक में ले जा सकते हैं। मैं जो कहने जा रहा हूँ उसमें कोई संदेह नहीं है। वह बस इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि यह एक ऐसी कहावत है जो हमारे समर्थन की पात्र है।

और यह 1 तीमुथियुस 1:15 में है, जिस तक हम पहुंचेंगे। यह 1 तीमुथियुस 3:1 में है। यह एक विश्वसनीय कहावत है, जो कोई पर्यवेक्षक बनने की इच्छा रखता है वह एक नेक कार्य की इच्छा रखता है। यह 1 तीमुथियुस 4:8 में है। और फिर हम 2 तीमुथियुस 2:11 में इसका सामना करते हैं। अगर हम उसके साथ मर गए, तो हम उसके साथ जिएंगे भी।

फिर तीतुस 3:7-8 में भी देखें, जहां पॉल कहता है, इस प्रकार उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने पर, हम अनन्त जीवन की आशा रखते हुए, वारिस बन जाते हैं। यह एक विश्वसनीय कहावत है। और उसने अभी मसीह के प्रकट होने और औचित्य के बारे में कई बातें कही हैं।

और वह कहता है कि मैं चाहता हूँ कि तुम चीजें करो। तो, मैं इस व्याख्यान को उस नोट पर समाप्त करूंगा, जो देहाती पत्रों पर केंद्रित है, यह वाक्यांश है, वफादार शब्द है। और मुझे यकीन है कि जैसे-जैसे हम इसकी जांच जारी रखेंगे, यह शब्द हमारे लिए विश्वसनीय साबित होगा।

और जैसा कि आप और मैं उस महान शब्द को अपने जीवन और सेवा में व्यवहार में लाना जारी रखते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट डब्ल्यू. यारब्रॉ और देहाती पत्रों पर उनकी शिक्षा, देहाती नेताओं और उनके अनुयायियों के लिए प्रेरितिक निर्देश है। सत्र 1, परिचय.